प्राक-शास्त्री, तृतीयसत्रार्द्धः

विषयः डोगरी पाठ्यक्रम (course - 16)

Credit 4/ 64 hours

क्र.सं	**डोगरी साहित्य (गद्य ते पद्य)**	**Credit 4**
युनिट 1	**क्हानियां ते क्हानीकार :** 1. डोगरी क्हानी बारै संखेप चर्चा। 2. नरेन्द्र खजूरिया - इक कविता दा अंत 3. वेद राही – रसभंग 4. छत्रपाल - क्हानी डाक्टर मेहबान बतर्ज किस्सा तोता मैना 5. चमन अरोड़ा - सीट न. 19	**1**
युनिट 2	**निबंध ते निबंधकार :** 1. डोगरी निबंध बारै संखेप चर्चा। 2. नीलाम्बर देव शर्मा – टरूनंद 3. प्रकाश प्रेमी – ब'रे दा ध्याड़ा 4. ज्ञान सिंह पगोच - भै जां डर 5. ओम विद्यार्थी - फुल्ल जि'नें भरमेरेआ	**1**
युनिट 3	**कवितां ते कवि :** 1. डोगरी कविता बारै संखेप चर्चा। **2.** तारा स्मैलपुरी - अनसंभे गीत **3.** पद्मा सचदेव - तवी ते चन्हां **4.** अरविंद – प्रण **5.** मोहन सिंह - घड़ी	**1**
युनिट 4	**डोगरी गजल ते गीत :** 1. डोगरी गजल ते गीत बारै संखेप चर्चा। 2. राम लाल शर्मा - 1.गजल 3. अश्विनी मगोत्रा - 1.गजल 4. दर्शन 'दर्शी' - 1.गजल 5. ज्ञानेश्वर - 1. गीत 2. गीत	**1**

पाठ्यपुस्तक - इंदरधनख

प्रकाशक - जे.एंड.के.स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन

विषय – डोगरी

प्राक शास्त्री पाठ्यक्रम

प्रस्तावना-

नई शिक्षा-नीति 2020 की पद्धति को ध्यान में रखते हुए डोगरी भाषा का प्राक्- शास्त्री के पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। प्राक्- शास्त्री के पाठ्यक्रम की दोनों पाठ्यपुस्तकों में डोगरी साहित्य के रचना संसार की झलक देने का प्रयास किया गया है। इन पुस्तकों में साहित्य की अगल-अलग विधाओं के सैद्धान्तिक परिचय के अलावा गद्य और पद्य जैसे – डोगरी कहानी, निबंध, एकांकी, कविता, गजल, गीत, के नमूने भी दिये गए हैं।

पाठ्यपुस्तकों में डोगरी साहित्य के विषयगत और रूपगत दोनों विशेषताओं का वर्णन किया गया है जो एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास हेतु अत्यंत लाभप्रद है। पाठ्यक्रम में इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक हो जिससे युवा पाठकों में सृजनात्मक क्षमता का विकास भी संभव हो सके।

संकलित रचनाओं के आधार पर बौद्धिक विकास को परखने के लिए रचनाओं से संबन्धित प्रश्नों के अलावा विद्यार्थियों के योग्यता विकास के लिए रचनात्मक प्रश्नावली भी दी गई है। इसका उद्देश्य विषय विशेष हेतु विद्यार्थियों की समझ को व्यावहारिक रूप से आगे बढ़ाना है। भाषा की जानकारी देने के लिए भाषा ज्ञान के अंतर्गत भाषा संबंधी प्रश्नों को भी उल्लिखित किया गया है, साथ-साथ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये गए हैं।

प्रत्येक रचना से पहले रचनाकार का परिचय और उसके साहित्यिक योगदान का उल्लेख निहित है। प्रत्येक रचना से पहले उसके साहित्यिक गुणों की संक्षिप्त टिप्पणी भी वर्णित है। उपरोक्त दोनों पुस्तकों में विधाएँ तो समान हैं परंतु रचना और रचनाकार अलग-अलग हैं।

पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पाठयक्रम में ये प्रयास किया गया है कि छात्रों में कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा अध्ययन-पठन योग्यता का विकास हो सके जिसके साथ-साथ छात्र सिर्फ डोगरी विषय में ही नहीं बल्कि डोगरी भाषा में लिखी गई अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन कर सकें जिससे साहित्य के आधार पर रचनात्मकता की ओर स्वयं प्रेरित हो सके।

उद्देशय- विद्यार्थियों को डोगरी कहानियों, निबन्धों, एकांकी, कविताओं, गीतों व गजलों के माध्यम से डोगरी साहित्य से परिचित करवाना तथा डोगरी गद्य व पद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं की जानकारी देना और विद्यार्थियों में

सृजनात्मक क्षमता का विकास करना पाठयक्रम का मुख्य उद्देश्य है , और विषय विशेष हेतु विद्यार्थियों की समझ को व्यावहारिक रूप से आगे बढ़ाना है।

फलितांश- पाठ्यक्रम की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थियों को डोगरी साहित्य के रचना संसार की झलक प्राप्त होती है। साहित्यिक विधाओं के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी होगी। विद्यार्थी डोगरी कविताओं का अनुभव प्राप्त करते हुए, स्वयं भी डोगरी में काव्य रचना करने में सक्षम व प्रेरित होगें। विद्यार्थी डोगरी निबन्धों , कहानियों, एकांकी और गीत, गजल की लेखन परम्परा से परिचित हो पाएंगे।

विषय – डोगरी

प्राक शास्त्री पाठ्यक्रम

प्रस्तावना-

नमीं शिक्षा-नीति 2020 दी पद्धति गी ध्यान च रखदे होई डोगरी भाशा दा प्राक्- शास्त्री दे पाठ्यक्रम दा निर्माण कीता गेआ ऐ । प्राक्- शास्त्री दे पाठ्यक्रम दी दौने पाठ्यपुस्तकें च डोगरी साहित्य दे रचना संसार दी झलक देने दा प्रयास कीता गेआ ऐ। इ'नें पुस्तकें च साहित्य दी बक्ख-बक्ख विधाएं दे सैद्धांतिक परिचे दे इलावा गद्य ते पद्य जि'यां – डोगरी क्हानी, निबंध, एकांकी, कविता, गजल, गीत, दे नमूने बी दित्ते गे न।

पाठ्यपुस्तकें च डोगरी साहित्य दे विशेगत ते रूपगत दौनें विशेशताएं दा वर्णन कीता गेआ ऐ जेह्ड़ा इक विद्यार्थी दे व्यक्तित्व विकास आस्तै बड़ा लाह्कारी ऐ। पाठ्यक्रम च इस गल्लै दा बी ध्यान रक्खेआ गेआ ऐ जे पाठ्यपुस्तकां रोचक ते ज्ञानवर्धक होन जेह्दे कन्नै युवा पाठकें च सृजनात्मक क्षमता दा विकास बी संभव होई सकै।

पाठ्यपुस्तकें च संकलित रचनाएं दे आधार पर बौद्धिक विकास गी परखने आस्तै रचनाएं कन्नै सरबंधत प्रश्नें दे इलावा विद्यार्थियें दे जोगता विकास आस्तै रचनात्मक प्रश्नावली बी दित्ती गेदी ऐ। जेह्दा उद्देश्य विशे विशेश लेई विद्यार्थियें दी समझ गी व्यावहारिक रूप कन्नै अग्गें बधाना ऐ। भाशा दी जानकारी आस्तै भाशा ज्ञान दे अंतर्गत भाशा सरबंधी प्रश्नें दा बी उलेख कीता गेआ ऐ, ते कन्नै गै औक्खे शब्दें दे अर्थ बी दित्ते गेदे न।

हर रचना दे पैह्लां रचनाकार दा परिचे ते ओह्दे साहित्यक योगदान दा वर्णन बी ऐ। हर रचना दे पैह्लें उं'दे साहित्यक गुणें दी संखेप टिप्पणी बी दित्ती दी ऐ। पाठ्यपुस्तकें दे माध्यम कन्नै पाठयक्रम च एह् प्रयास कीता गेदा ऐ जे छात्रें गी घट्ट शा घट्ट समें च मता अध्ययन-पठन जोगता दा विकास होई सकै , जेह्दे कन्नै छात्र सिर्फ डोगरी विशे च गै नेईं बल्कि डोगरी भाशा च लिखी गेदी होर कताबें दा बी अध्ययन करी सकन जेह्दे कन्नै साहित्य दे अधार पर रचनात्मकता दे बक्खी आपूं प्रेरत होई सकन।

उद्देश्य- विद्यार्थियें गी साहित्य दी विधां जि'यां डोगरी क्हानी, निबंध, एकांकी, कविता, गीत ते गजल दे माध्यम कन्नै डोगरी साहित्य दा परिचे कराना ते डोगरी गद्य ते पद्य साहित्य दी बक्ख-बक्ख विधाएं दी जानकारी देने दे कन्नै-कन्नै विद्यार्थियें च सृजनात्मक क्षमता दा विकास करना पाठयक्रम दा मुक्ख उदेश्य ऐ , कन्नै गै विशे विशेश लेई विद्यार्थियें दी समझ गी व्यावहारिक रूप कन्नै अग्गें बधाना ऐ।

फलितांश- पाठ्यक्रम दी पाठ्यपुस्तकें दे माध्यम कन्नै विद्यार्थियें गी डोगरी साहित्य दे रचना संसार दी झलक प्राप्त होग। साहित्यिक विधाएं दे इतिहासक परिप्रेक्ष्य दी जानकारी होग। विद्यार्थी डोगरी कविताएं दा अनुभव हासल करदे होई, आपूं बी डोगरी च काव्य रचना करने च प्रेरित होङन। विद्यार्थी डोगरी निबंधें, क्हानियें, एकांकी ते गीत-गजल दी लेखन परम्परा कन्नै परिचित होङन।